अशुभ की समस्या
The Problem of Evil

अशुभ क्या है ?

जीवन में कुछ ऐसी वस्तुएँ, घटनाएँ एवं क्रियाएँ होती हैं, जिन्हें हम जीवन का आवश्यक अंग कह सकते हैं। प्राचीन काल के लोग जीवन की अनेक समस्याओं की व्याख्या करने में असमर्थ थे, क्योंकि बुद्धि का उनके पास पूर्ण अभाव था। परन्तु आज मानव-बुद्धि का विकास चरमसीमा तक आ गया है और इसलिए इसकी व्याख्या आवश्यक है। मानव-जीवन के वास्तविक अध्ययन से यह ज्ञात होता है कि जीवन सुख-दुःख, हर्ष-विषाद, आशा-निराशा आदि से परिपूर्ण है। जीवन में एक ओर हास्य एवं आनन्द है तो दूसरी ओर क्रन्दन एवं असंतोष। पर इन सबका कुछ आधार अवश्य है और ये आधार, जिनके कारण मानव-जीवन दुःखी है, सांसारिक अशुभ कहे जाते हैं। जीवन के कड़ुवे-मीठे अनुभव इस सत्य की ओर संकेत करते हैं कि मानव-जीवन शुभ-अशुभ का भंडार है।

शुभ-अशुभ का वाह्य-विश्लेषण सम्भव नहीं, क्योंकि, इनका सम्बन्ध आन्तरिक अनुभूतियों से है। इनका स्थान हमारी भावनाओं एवं संवेगों के आधार में है। परन्तु हमारे संवेगों एवं हमारी भावनाओं में अनेक परिवर्तन होते रहे हैं; इसलिए शुभ-अशुभ का भी रूप आरम्भ से परिवर्तित होता रहा है।

परम्परागत ईश्वरवाद (traditional theology) आरम्भ से ही अशुभ की व्याख्या करने में प्रयत्नशील रहा है। ईश्वर, जो सर्वशक्तिमान् तथा शुभ है, किस प्रकार युद्ध, विनाश आदि को जन्म देता है ? क्या इन अशुभों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि ईश्वर अपूर्ण है ? इस तरह ऐसे प्रश्न हमारे समक्ष आते हैं, जिनकी व्याख्या हम लोग इस अध्ययन में करेंगे।

Scanned by TapScanner

अशुभ जीवन और जगत का एक आवश्यक अंग है। अतः जब हम जीवन और जगत पर विचार प्रारम्भ करते हैं तो अशुभ की समस्या पर भी विचार करना पड़ता है। इस समस्या पर विचार किये बिना तो जीवन और जगत का विचार अपूर्ण और अधूरा है। इसी कारण धर्म-दर्शन के विद्वान इस समस्या पर विचार करते हैं, क्योंकि इसके सहारे ही जीवन और जगत को यथार्थ दृष्टि से समझा जा सकता है। इस समस्या के सम्बन्ध में पहला प्रश्न यह है कि अशुभ क्या है? अर्थात् अशुभ की परिभाषा क्या है? इसकी परिभाषा दो दृष्टिकोणों से की गयी है—अभावात्मक और भावात्मक। अभावात्मक दृष्टि सर्वसाधारण दृष्टि है, अथवा यह अशुभ का सामान्य प्रचलित अर्थ है। सामान्यतः शुभ के अभाव को अशुभ कहते हैं। यह निषेधात्मक है, क्योंकि यह शुभ का निषेध बतलाता है, परन्तु इससे केवल यही पता चलता है कि जो शुभ नहीं है वह अशुभ है। इस परिभाषा में केवल अभाव या निषेध पक्ष पर जोर या बल दियो गया है परन्तु इससे यह नहीं पता चलता कि अशुभ क्या है। रात दिन का अभाव है और मृत्यु जीवन का अभाव है। इनसे तो केवल अभाव का ज्ञान होता है। दो विपरीत वस्तुओं या तथ्यों को एक दूसरे के विरोधी रूप में बतलाया जा सकता है। रात और दिन जीवन और मृत्यु के समान एक दूसरे के विरोधी हैं। रात यदि दिन का अभाव है या जीवन यदि मृत्यु का अभाव है तो दिन भी रात का अभाव है और मृत्यु भी जीवन का अभाव है। अतः अभावात्मक परिभाषा से केवल दो वस्तुओं के विरोध का पता चलता है, इनके स्वरूप का पता नहीं चलता। स्वरूप के ज्ञान के लिये तो भावात्मक परिभाषा की आवश्यकता है। अतः प्रश्न यह है कि अशुभ की भावात्मक परिभाषा क्या है? अशुभ दैन्य भाव या दुःख की अनुभूति है। इसकी उत्पत्ति प्रतिकूल भावनाओं से होती है। जिस प्रकार जीवन और जगत के अनुकूल विचार सुख के जनक हैं उसी प्रकार इनके प्रतिकूल विचार दुःख के जनक हैं। सुख और दुःख की अनुभूति स्वाभाविक है। तात्पर्य यह है कि मानव स्वभावतः इन दोनों प्रकार के अनुभवों को प्राप्त करता रहता है। जीवन इन अनुभवों के बिना चल नहीं सकता। हमें अनुकूल और प्रतिकूल दोनों प्रकार के अनुभव होते रहते हैं जिनके कारण हमारा जीवन सुखी और दुःखी होता रहता है। संक्षेप में, हम कह सकते हैं कि अनुकूल भावनाएँ सुख उत्पन्न करती हैं और प्रतिकूल भावनाएँ दुःख उत्पन्न करती हैं। पहले को शुभ और दूसरे को अशुभ

Scanned by TapScanner

कहते हैं। ये दोनों सापेक्ष हैं अर्थात् एक का दूसरे के बिना अस्तित्व असम्भव है। केवल शुभ या केवल अशुभ तो जीवन और जगत का विरोधी है। इसीलिये कहा गया है कि शुभ-अशुभ, स्त्री-पुरुष और प्रकाश-अन्धकार के समान सापेक्ष पद हैं। इनमें से किसी एक का दूसरे के बिना सही अर्थ नहीं समझा जा सकता। प्रसिद्ध विद्वान गैलवे का कहना है कि मानव अनुभूति में अशुभ शुभ से सम्बद्ध है। धर्म या पुण्य को अधर्म या पाप के बिना नहीं समझा जा सकता, क्योंकि दोनों सापेक्ष हैं। एक का विचार ही दूसरे के विचार को स्वभावतः उपस्थित कर देता है।[1] इससे स्पष्ट है कि शुभ और अशुभ सापेक्ष पद हैं तथा सम्बद्ध अनुभव। सुख जीवन की सुखात्मक अनुभूति है तथा दुःख जीवन की अशुभात्मक अनुभूति है।

एक आवश्यक प्रश्न यह है कि अशुभ यदि दुःख की अनुभूति है तो मनुष्य इसे क्यों चाहता है? उत्तर यह कि अशुभ की सत्ता मनुष्य के चाहने पर निर्भर नहीं। कोई भी व्यक्ति अपनी इच्छा से दुःख नहीं भोगना चाहता, परन्तु उसे दुःख भोगना पड़ता है। अशुभ शुभ के समान हमारे जीवन का अंग है, इससे त्राण नहीं। अतः हमें यह स्वीकार करना होगा कि अशुभ की सत्ता संसार में है। यदि जीवन है तो कम या अधिक दुःख का अनुभव अवश्य होगा। इसीलिये अशुभ को जीवन का संदेह-रहित सत्य माना गया है।[2] हमें जीवन मिला है तो मरण भी मिलेगा, हम स्वस्थ हैं तो रोगी भी होना पड़ेगा, यौवन है तो बुढ़ापा भी अवश्य आयेगा। इसीलिये सन्तों का कहना है कि मनुष्य मरने के लिये जीता है, बूढ़ा होने के लिये जवान होता है और रोगी होने के लिये स्वस्थ होता है। तात्पर्य यह है कि अशुभ शुभ के समान जीवन का स्वाभाविक अनुभव है। कुछ दार्शनिक तो अशुभ और दुःख को जीवन का शाश्वत सत्य बतलाते हैं। जन्म से मृत्यु तक मनुष्य केवल दुःख ही भोगता रहता है। सुख तो क्षणिक है, दुःख ही शाश्वत सत्य है। जीवन भर हम हैरान और परेशान रहते हैं, अनेकों प्रकार के अभाव से पीड़ित रहते हैं। भूकम्प, भूचाल, ग्रह, नक्षत्र आदि सभी हमें परेशान करते हैं। अतः जीवन के समस्त अनुभव तो अशुभ युक्त हैं।[3]

---

1. To our experiences evil is essentially related to good, to think of a virtue is to presuppose a vice as its counterpart and the two idea imply one another.

अशुभ या दुःख जीवन और जगत का सबसे कठोर सत्य है। महात्मा बुद्ध सम्पूर्ण जीवन को दुःख या विषाद युक्त मानते हैं। अपने प्रथम आर्यसत्य में तथागत का कहना है "जन्म लेना दुःख है, जरा (बुढ़ापा) दुःख है, मरण दुःख है, शोक करना दुःख है, विलाप करना (रोना; पीटना) दुःख है, पीड़ा होना दुःख है, चिन्तित होना दुःख है, व्यग्र (परेशान) होना दुःख है, इच्छाओं की तृप्ति न होना दुःख है, प्रिय से वियोग दुःख है। अप्रिय से संयोग दुःख है, संक्षेप में पञ्च-स्कन्ध (शरीर-धारण) ही दुःख है।" इसमें तथागत ने बतलाया है कि दुःख जीवन का सबसे बड़ा सत्य है। अतः अशुभ सबसे व्यापक तत्व है।

अशुभ की समस्या क्या है? हमने अब तक यह देखा कि अशुभ की सत्ता अवश्य है। इसकी सत्ता वास्तविक है, काल्पनिक नहीं। यदि जीवन है तो अशुभ भी है। अब हम इसकी समस्या पर विचार करेंगे। यहाँ यह जान लेना आवश्यक है कि अशुभ की समस्या केवल ईश्वरवाद के लिए है, क्योंकि परम शुभ परमात्मा और अशुभ दोनों एक साथ असंगत से जान पड़ते हैं। यदि परम शुभ परमात्मा है तो अशुभ उसके लिए एक चुनौती है। इसका कारण यह है कि ईश्वरवाद के अनुसार ईश्वर ही एकमात्र सत् है तो अशुभ को असत् होना चाहिए, परन्तु अशुभ असत् नहीं। दूसरी बात यह है कि ईश्वरवाद के अनुसार ईश्वर ही जगत का कर्त्ता, धर्त्ता और हर्त्ता है, वह सर्वशक्तिमान, सर्वज्ञ और सर्वव्यापी है। वह परम शुभ और दया-सागर है। यदि वह सबका स्रष्टा है तो अशुभ का भी स्रष्टा वही है। यदि वह अशुभ का स्रष्टा नहीं तो अशुभ भी ईश्वर के समान एक स्वतन्त्र तत्त्व है जो ईश्वर की शक्ति के परे है, परन्तु ऐसा मानना उचित नहीं, क्योंकि सर्वशक्तिमान ईश्वर के अतिरिक्त शक्तिशाली और स्वतन्त्र तत्व नहीं हो सकता, क्योंकि दो समानतः स्वतन्त्र तत्व से द्वैतवाद की स्थापना होगी जो एक परम स्वतन्त्र ईश्वर का विरोधी होगा। तीसरी बात यह है कि ईश्वर दया-सागर है तो दुःख-दैन्य रूप अशुभ की सृष्टि क्यों करता है? यदि वह परम पिता, परमात्मा, परम दयालु है तो अपनी सन्तान को दुःखी क्यों देखता है? यदि वह दुःखी देखता है तो वह दयालु नहीं, कठोर है और कृपा-सागर नहीं कहला सकता। यदि वह सचमुच दयालु और सर्वशक्तिमान होता तो अशुभ या दुःख की सत्ता को पहले ही समाप्त कर देता। या तो वह अशुभ को समाप्त करने में असमर्थ था अथवा जान-बूझकर इसकी सृष्टि किया जिससे संसार के लोग दुःखी और परेशान हों। यदि ईश्वर असमर्थ था तो सर्वशक्तिमान नहीं, उसके समान (शुभ के समान) शक्तिशाली दूसरा तत्व अशुभ प्रारम्भ से ही है और यदि वह समर्थ होते हुए भी अशुभ को समाप्त नहीं किया तो मानव के साथ बड़ा भारी धोखा किया, अपनी क्रूरता और निर्दयता का परिचय दिया। स्पष्ट है कि अशुभ ईश्वरवाद के लिए चुनौती है। कहा जाता है कि परम दयालु परमात्मा ने अपनी स्वेच्छा से तथा

Scanned by TapScanner

अपनी शुभ-इच्छा से सृष्टि की।[1] यह कथन कहाँ तक सत्य और समीचीन है।

स्पष्ट है कि परमात्मा की प्रभुता और प्रेम के लिए अशुभ की सत्ता एक गहरा प्रश्न चिह्न है। यही अशुभ की समस्या है। इस समस्या को स्पष्ट करते हुए पैटरसन महोदय कहते हैं कि (सर्वशक्तिमान) ईश्वर अशुभ को संसार में प्रवेश करने से अवरुद्ध कर सकता था; परन्तु उसने स्वेच्छा से अवरोध नहीं उत्पन्न किया (अशुभ का अवरोधक नहीं बना), तो ईश्वर शुभ नहीं हो सकता, अथवा अशुभ के मार्ग में अवरोध करना ईश्वर की सामर्थ्य के बाहर है; तो यद्यपि वह शुभ है; परन्तु उसकी शक्ति सीमित है।[2] प्रो० गैलवे ने भी इस समस्या पर प्रकाश डालते हुए कहा है कि "अशुभ की सत्ता तो ईश्वर में विश्वास का साधक नहीं बाधक है, क्योंकि हम ईश्वर को शुभ मानते हैं। यदि वह शुभ है तो दुःख और पाप-रूप अशुभ की संगति उससे नहीं।"[3] तात्पर्य यह है कि शुभ रूप ईश्वर और अशुभ रूप पाप दोनों एक साथ असंगत विचार हैं। पहला धर्म और पुण्य है तो दूसरा अधर्म और पाप है। धर्म-अधर्म, पुण्य-पाप एक साथ कैसे। इनमें तो प्रकाश और अन्धकार के समान विरोध का सम्बन्ध है। इस समस्या का समाधान विभिन्न विद्वानों ने किया है, परन्तु किसी का समाधान सर्वमान्य नहीं। इसीलिए प्रो० डी० एम० एडवर्ड महोदय कहते हैं कि अशुभ की समस्या तो एक गहन रहस्य है जिसके लिए सैद्धान्तिक सर्वमान्य समाधान संसार में उपलब्ध नहीं।[4] यदि हम ईश्वर को प्रेमपूर्ण, न्यायप्रिय और सर्वशक्तिमान मान लें तो अशुभ की समस्या गहन हो जाती है।[5] आगे इस समस्या के विस्तार में इस पर अधिक प्रकाश दिया जायेगा।

Scanned by TapScanner

अशुभ की उत्पत्ति

(The origin of Evils)

सर्वप्रथम हमलोग अशुभ की उत्पत्ति का अध्ययन करेंगे । कुछ विद्वानों का मत है कि अशुभ का कारण ईश्वर नहीं, बल्कि भौतिक पदार्थ है, जो अपूर्ण (imperfect) है ।

Scanned by TapScanner

अगस्टाइन ने अपने लेख "The Origin of Evil in Nature" में अशुभ की उत्पत्ति की व्याख्या करते हुए कहा है कि मानव ईश्वर के गुणों का निरादर करता है तथा भौतिक वस्तुओं में ही लिप्त रहता है। ये भौतिक पदार्थ ही हमारे अशुभों के मूल कारण हैं। इसके अतिरिक्त इसके अनुसार यदि हम विश्व को एक मान लें तो हमें अशुभ का वाह्य ज्ञान ही नहीं हो सकता है। अशुभ का ज्ञान केवल मानव के सीमित ज्ञान का फल है, जिसका वाह्य रूप अदृश्य है। एक ही वस्तु, जिसे हम एक विशेष दृष्टिकोण से अशुभ की संज्ञा देते हैं, यदि दूसरे दृष्टिकोण से देखी जाय तो शुभ है। अगस्टाइन के अनुसार अशुभ का अर्थ भ्रष्टाचार (corruption) है। इसका अर्थ है कि कोई ऐसी वस्तु है, जिसे अपवित्र (corrupt) किया गया है अर्थात् वह स्वयं में पवित्र है, शुभ है। अतः अगस्टाइन के अनुसार प्रत्येक वस्तु मूलतः शुभ है, जिसे मानव का अपना दृष्टिकोण अशुभ बना डालता है।

यदि प्रत्येक वस्तु के मूल में शुभ है तो अशुभ की उत्पत्ति कहाँ से होती है, कैसे होती है ? हमारे जीवन की अनुभूतियाँ हमें अशुभ को सत्य मानने के लिए बाध्य करती हैं। यहाँ अगस्टाइन कुछ और आगे बढ़कर हमें बताता है कि निःसन्देह प्रत्येक वस्तु शुभ है, यदि हम विश्व को एक सम्पूर्णता (as a whole) में समझने का प्रयास करेंगें। परन्तु, ज्योंही हम विश्व के किसी विशेष भाग की ओर दृष्टिपात करते हैं, त्योंही हमें वह शुभ अशुभ जान पड़ता है। उसका वास्तविक रूप अस्पष्ट होकर अशुभ के रूप में हमारे समक्ष स्पष्ट होता है। वास्तव में स्वयं वह अशुभ न होकर पूर्णतः शुभ है। इस बात की व्याख्या एक उपमा के सहारे की जा सकती है। रोटी एक भूखे व्यक्ति के लिए अत्यन्त प्रिय है, क्योंकि वह उसकी आवश्यकता की पूर्त्ति करती है। परन्तु वही रोटी एक रोगी के लिए अत्यन्त हानिकारक है। इसी प्रकार विश्व की अन्य वस्तुएँ किसी विशेष व्यक्ति के लिए अशुभ जान पड़ती हैं पर वास्तव में वे वैसी नहीं हैं। रोटी, दो अलग-अलग दृष्टिकोणों से अलग-अलग शुभ और अशुभ जान पड़ती है। इसी प्रकार विश्व का अध्ययन यदि इसकी सम्पूर्णता के साथ किया जाय तो स्वयं में यह शुभ है; यदि इसका अध्ययन अपूर्ण रूप से किया जाय तो यह अशुभ हो जाता है। अतः अशुभ केवल उसके लिए ही अशुभ है, जो विश्व का अध्ययन उसकी अपूर्णता (imperfection) के साथ करता है, अन्यथा वह शुभ है। अशुभ-अशुभ है, जब हममें ज्ञान का अभाव है। वास्तव में कुछ भी अशुभ नहीं है।

अशुभ की उत्पत्ति के सम्बन्ध में ऊपर दी गई व्याख्या के समर्थन में एक और उपमा दी जा सकती है। जब हम संगीत के किसी एक वाद्ययंत्र को सुनते हैं तो हमें संगीत का पूर्ण आनन्द नहीं मिलता है, पर जब कई वाद्य-यंत्रों को एक साथ सुनते हैं तो वह कर्णप्रिय प्रतीत होता है। इसी प्रकार विश्व को यदि सम्पूर्णता के रूप में देखा जाय तो प्रत्येक वस्तु अपने में शुभ है। यदि इसे अलग-अलग देखने की कोशिश की जाय तो वही बस्तु अशुभ-सी जान पड़ती है।

Scanned by TapScanner

अतः अशुभ की उत्पत्ति के कारणों में एक यह है कि हमारे अपने दृष्टिकोण ही अशुभ को जन्म देते हैं। एक ही वस्तु अलग-अलग व्यक्ति के लिए शुभ एवं अशुभ है; क्योंकि उसका अपना अलग-अलग दृष्टिकोण है, जिससे वह सामान्य वस्तु को ही दूसरे-दूसरे रूप में देखने की कोशिश करता है।

कुछ अन्य विद्वानों ने अशुभ की व्याख्या करते हुए कहा है कि यह एक रहस्य है। ईश्वर के अनेक रहस्यों में अशुभ भी एक रहस्य है। विश्व के अनेकानेक शुभों-अशुभों का कारण ईश्वर ही है। ईश्वर ने ही अशुभ को भी जन्म दिया है। ह्यूम (Hume) ने भी इसे स्वीकारा है।

क्या ईश्वर अशुभ का कारण है ?

(Is God responsible for the Evils)

प्रत्येक धर्म ईश्वर को विश्व के स्रष्टा एवं संचालक के रूप में स्वीकार करता है। संसार की प्रत्येक वस्तु का निर्माण ईश्वर ने किया है। उसकी रक्षा एवं सुरक्षा के लिए पूर्णरूप से ईश्वर ही उत्तरदायी है। अब प्रश्न आता है कि यदि ईश्वर ने विश्व की रचना की है तो क्या जिसे हम अशुभ कहते हैं उसका कारण भी ईश्वर ही है ? कुछ लोगों का विचार है कि ईश्वर विश्व का कारण है, इसलिए वह विश्व के अशुभों का भी कारण अवश्य होगा। परन्तु ईश्वर दयालु, उदार एवं दोषहीन है, तो उसने अशुभ को क्यों जन्म दिया ? यह एक ऐसा प्रश्न है जो धर्म के लिए समस्या बन जाता है। इसलिए यह आवश्यक है कि हम इसकी व्याख्या करें। ईश्वरवादियों ने इसकी व्याख्या करने का प्रयत्न किया है।

कुछ लोग, जो यह कहते हैं कि अशुभ का कारण ईश्वर है, उनका तर्क यह है कि संसार की प्रत्येक क्रिया (action) ईश्वर की इच्छा पर निर्भर करती है, संसार की प्रत्येक वस्तु का कारण ईश्वर है। अतः अशुभ का भी कारण ईश्वर ही है। इस बात को स्पष्ट करने के लिए एक उदाहरण का सहारा लिया जा सकता है। यदि एक व्यक्ति जा रहा है और किसी छत पर से एक पत्थर उसके सिर पर गिरता है, जिससे उसका सिर फट जाता है, तो हम कहेंगे कि यह घटना उसके लिए अशुभ है और इस घटना का कारण ईश्वर है। अतः अशुभ का कारण ईश्वर है। यहाँ इस बात का

Scanned by TapScanner

विरोध किया जा सकता है कि पत्थर के सिर पर गिरने का कारण तेज हवा है, पर तेज हवा का कारण क्या है ? यदि यह कहा जाय कि तेज हवा का कारण, सूर्य की तेज रोशनी के कारण समुद्र के पानी का हवा का रूप लेना है, तो प्रश्न उठता है कि सूर्य की तेज रोशनी का क्या कारण है ? इस प्रकार हमारे समक्ष अनेक प्रश्न एक के बाद दूसरे उठते हैं । अन्त में जब प्रश्नों का उत्तर कुछ नहीं मिलता तो हम उसका कारण ईश्वर को ही मान लेते हैं । अतः ईश्वर ही सभी वस्तुओं एवं घटनाओं का कारण है । अशुभ भी इस प्रकार ईश्वर की ही देन है ।

परन्तु, ईश्वर को अशुभ के कारण के रूप में मानना असंगत एवं निर्मूल-सा जान पड़ता है । ईश्वर में अनेक शुभ गुण हैं, जिनके कारण हम यह नहीं कह सकते कि ईश्वर ने ही अशुभ को जन्म दिया है । कई मुख्य तर्कों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि अशुभ का कारण ईश्वर नहीं है ।

यदि हम मान लें कि ईश्वर ने अशुभ की उत्पत्ति की तो प्रश्न उठता है कि उसने ऐसा क्यों किया ? यदि इसके उत्तर में यह कहा जाय कि ईश्वर का इसके पीछे अपना कोई उद्देश्य है, जिसकी प्राप्ति के लिए ईश्वर ने अशुभ को जन्म दिया तो यह ईश्वर की असीमता का खण्डन करना है । ईश्वर एक असीमित सत्ता है, जिसमें किसी प्रकार की इच्छा, अभिलाषा नहीं । इच्छा, अभिलाषा आदि व्यक्तियों में पायी जाती हैं । ईश्वर पूर्ण सत्ता है, अतः उसमें किसी भी प्रकार की इच्छा का पूर्ण अभाव है । इसलिए यह कहना कि ईश्वर ने अपनी कुछ अभिलाषाओं की पूर्त्ति के लिए विश्व में अशुभ को जन्म दिया, गलत है ।

अशुभ का अर्थ किसी वस्तु का अभाव है । जैसे—मृत्यु एक अशुभ है, जिसमें हम जीवन (life) का पूर्ण अभाव पाते हैं । इसी प्रकार रोग, गरीबी आदि अशुभ हैं, क्योंकि इनमें स्वास्थ्य एवं धन का अभाव है । अतः अशुभ का अर्थ किसी चीज का अभाव समझा जायगा । परन्तु विश्व, जिसका कारण ईश्वर है, वहाँ किसी वस्तु का अभाव नहीं । हम किसी ऐसी वस्तु की कल्पना नहीं कर सकते, जिसका संसार में अभाव है । पर अशुभ है—यह एक निर्विवाद सत्य है । लेकिन इसका कारण क्या है ? इसके उत्तर में यह कहा जा सकता है कि अशुभ का कारण मानव स्वयं है । ईश्वर किसी दशा में अशुभ का कारण नहीं समझा जा सकता है । ईश्वर का अपना कोई ऐसा विचार नहीं, जिसके कारण उसने अशुभ को जन्म दिया । उसने केवल सांसारिक वस्तुओं को जन्म दिया, जो निर्दोष (good) हैं । पर किसी व्यक्ति को उनका अभाव प्रतीत होता है तो वहाँ उसके लिए अशुभ आ जाता है । अतः मानव स्वयं ही अशुभ का कारण है । प्रत्येक अशुभ के मूल में निर्दोष वस्तुओं का पूर्ण अभाव है, जिसे व्यक्ति स्वयं लाता है । व्यक्ति के कर्म ही उसके अशुभ के कारण हैं । एक अन्धे व्यक्ति के लिए अन्धापन एक अशुभ है, परन्तु उसका यह अन्धापन उसके पूर्व जीवन के कर्मों

Scanned by TapScanner

का फल है। इसी प्रकार मानव अपनी अज्ञानता के कारण स्वयं ऐसे कर्म करता है, जिसके कारण उसे अनेक अशुभों का सामना करना पड़ता है, जिनका निर्माता मानव स्वयं है।

मानव का अपना मत है कि संसार में शुभ की अपेक्षा अशुभ अधिक है। इसका कारण यह है कि व्यक्ति सारे विश्व एवं उसकी सभी चीजों को केवल अपने लिए चाहता है। वह अज्ञानता के कारण सारे विश्व को अपने लिए समझता है। परन्तु जब कुछ परिस्थितियों के कारण उसका यह स्वप्न खण्डित होता है तो संसार की प्रत्येक वस्तु उसे अशुभ प्रतीत होने लगती है। आशाओं के विपरीत यदि संसार में कुछ होता है तो उसे वह अशुभ की संज्ञा देता है, यद्यपि वह वस्तु या घटना स्वयं में कोई अशुभ नहीं। अतः मानव स्वयं शुभ को अशुभ का रूप देता है। यदि उसे इस बात का ज्ञान हो कि वह प्रकृति का एक कण-मात्र है तथा विश्व केवल उसके लिए ही नहीं है, तो शायद वह अशुभ का अनुभव नहीं करे। मानव को, संसार के अन्दर उसका क्या स्थान है, इसे समझना चाहिए। इसके आधार पर ही अशुभ एवं शुभ के वास्तविक भेद को वह समझ सकता है, सत्य को परख सकता है, अन्यथा नहीं।

इन तर्कों के आधार पर हम इस निष्कर्ष पर आते हैं कि ईश्वर को अशुभ का कारण मान लेना, मानव की एक भूल है। वास्तव में अशुभ का कारण मानव स्वयं है। अतः ईश्वर को अशुभ का कारण मानना असंगत है।

Scanned by TapScanner

अशुभ के प्रकार
(Kinds of Evils)

हमने यह देख लिया है कि विश्व में अशुभ आवश्यक रूप से वर्तमान है। परन्तु इसका कारण ईश्वर नहीं, बल्कि स्वयं मानव ही है। अब हमारे समक्ष यह प्रश्न आता है कि अशुभ कितने प्रकार के होते हैं। कुछ विद्वानों ने दो प्रकार के अशुभों को स्वीकार किया है—(i) प्राकृतिक अशुभ तथा (ii) नैतिक अशुभ। कुछ अन्य विचारकों के अनुसार अशुभ तीन प्रकार के हैं—(i) प्राकृतिक अशुभ, जिसका कारण प्रकृति मानी जाती है, (ii) नैतिक अशुभ, जिसका कारण मानव के अपने कर्म हैं, तथा (iii) वह अशुभ जिसका कारण एक व्यक्ति है; परन्तु जिसका भागी अन्य सभी व्यक्ति हो सकते हैं। वास्तव में यह नैतिक अशुभ में ही माना जाता है; क्योंकि विद्वानों के अनुसार यह नैतिक अशुभ का ही अंग कहा जा सकता है। अतः इसका कोई अलग स्थान नहीं, और न इसका कारण ही अलग है। नीचे हमलोग अशुभ के इन दो मुख्य प्रकारों की चर्चा करेंगे।

Scanned by TapScanner

(i) प्राकृतिक अशुभ
(Natural Evils)

प्राकृतिक अशुभ क्या है ? प्राकृतिक अशुभ का स्वरूप इसके शाब्दिक अर्थ से ही स्पष्ट हो जाता है। प्राकृतिक अशुभ उस प्रकार के अशुभ का संकेत करता है, जिसके कारण प्रकृति के अन्दर होनेवाली घटनाएँ एवं परिवर्तन हैं। प्राकृतिक घटनाएँ कुछ ऐसी होती हैं, जिनसे मानव को अनेक कष्टों का सामना करना पड़ता है। ऐसी कठिनाइयों एवं कष्टों को ही प्राकृतिक अशुभ के नाम से पुकारा जाता है।

पीड़ा, वेदना, मृत्यु आदि प्राकृतिक अशुभ हैं। ये प्रकृति के ऐसे अशुभ हैं, जिनका शिकार मानव ही नहीं, सभी जीवित प्राणियों को होना पड़ता है। इसके साथ ही हम यह भी नहीं कह सकते कि ये अशुभ प्रकृति के आकस्मिक (accidental) अशुभ हैं, बल्कि ये आवश्यक अशुभों में कहे जा सकते हैं। क्योंकि शायद पृथ्वी का कोई भी ऐसा प्राणी नहीं, जिसे प्रकृति के इन अशुभों का सामना न करना पड़ता है। प्रकृति स्वयं अपने विकास के क्रम में इन अशुभों के कीड़ों (germs) को जन्म देती है। प्रकृति में हमें नित्य इस सत्य का दर्शन होता है कि एक जीव दूसरे जीव की मृत्यु का कारण बनता है। अतः प्रकृति स्वयं उन शक्तियों को जन्म देती है जो प्राकृतिक अशुभ के आधार माने जा सकते हैं।

इसके अतिरिक्त प्राकृतिक नियमों के अध्ययन से यह स्पष्ट है कि इसके अनेक नियम अशुभ के कारण हैं। भूकम्प, बाढ़, प्लेग, वर्षा आदि प्राकृतिक नियम हैं, जिनके कारण मानव को अनेक अशुभों का सामना करना पड़ता है। बाढ़ एवं भूकम्प से हजारों व्यक्तियों का नाश हो जाता है। ज्वालामुखी के फूटने से मानव एवं पशु दोनों को हानि होती है। अतः प्राकृतिक नियम ही प्राकृतिक अशुभों का कारण है। इस प्रकार प्राकृतिक अशुभ से अर्थ उन अशुभों से है, जिनका कारण स्वयं प्रकृति एवं प्राकृतिक नियम हैं। यहाँ मानव का अपना कोई हाथ नहीं होता है।

(ii) नैतिक अशुभ
(Moral Evil)

जहाँ प्राकृतिक अशुभ प्रकृति की देन है, वहाँ नैतिक अशुभ का स्रोत मानव के अपने कर्म हैं। गैलवे के अनुसार यदि प्राकृतिक अशुभ विश्व में न होता तो शायद नैतिक अशुभ का भी विश्व में पूर्ण अभाव होता। नैतिक अशुभ का अर्थ उस अशुभ से है, जिसका कारण मानव है। मानव अपने कर्मों के कारण अनेक दुःखों का भागी बनता है। उसे उन अशुभों का सामना करना पड़ता है, जिन्हें स्वयं उसने ही जन्म दिया है। गैलवे के अनुसार प्राकृतिक अशुभों के कारण मानव अनेक कष्टों को सहता

Scanned by TapScanner

है। मानव का यह स्वभाव है कि वह अपने संवेगों, इच्छाओं तथा अभिलाषाओं की पूर्त्ति चाहता है। परन्तु प्राकृतिक नियम उसके रास्ते में बाधक बनकर आते हैं और इस प्रकार उसकी इच्छाओं की पूर्त्ति नहीं होती है। फलस्वरूप वह कुछ ऐसे कर्मों को करने के लिए बाध्य होता है, जिन्हें हम अनैतिक की संज्ञा देते हैं। इन्हीं अनैतिक कर्मों के कारण मानव अनेक अशुभों का शिकार होता है। उदाहरण के लिए वर्षा भूकम्प के कारण किसी व्यक्ति का सब कुछ नाश हो जाता है, और वह अपनी आवश्यकताओं की पूर्त्ति के लिए अनुचित कर्म करता है—जैसे चोरी, डकैती आदि। परन्तु अनुचित कर्मों का फल भी उस व्यक्ति को अवश्य मिलता है—उसे उनका दंड भी मिलता है और इसे ही हम नैतिक अशुभ कहते हैं। अतः गैलवे का यह मत तर्क-पूर्ण है कि प्राकृतिक अशुभ नैतिक अशुभ को जन्म देता है।

यदि यह पूछा जाय कि विकास के किस स्थल पर प्राकृतिक अशुभ नैतिक अशुभ को जन्म देता है तो इसका कोई ठोस उत्तर देना असम्भव होगा। हम यह निश्चित नहीं कह सकते हैं कि मानवता के विकास के अमुक स्थल पर ही नैतिक अशुभ का जन्म होता है। अतः यह एक ऐसा प्रश्न है, जिसका कोई भी निश्चित उत्तर नहीं दिया जा सकता है।

कुछ अन्य विद्वानों के मतानुसार नैतिक अशुभ ही प्राकृतिक अशुभ से पूर्व संसार में था। जो इस विचार के समर्थक हैं—उनका कहना है कि संसार में, ईश्वर ने जिन सारी वस्तुओं को जन्म दिया है, वे सभी निर्दोष हैं। परन्तु मानव ने उन वस्तुओं का उचित उपयोग नहीं किया। इसका फल यह हुआ कि ईश्वर ने मानव से क्रुद्ध हो संसार में प्राकृतिक अशुभों की भेजा। इस प्रकार हम पाते हैं कि यह विषय, कि पहले प्राकृतिक अशुभ संसार में था और उसके बाद नैतिक अशुभ आया, एक विवादास्पद विषय है। पहले नैतिक अशुभ आया अथवा प्राकृतिक अशुभ, कुछ भी नहीं कहा जा सकता है। पर, इतना तो स्वीकार करना ही पड़ेगा कि संसार में दोनों प्रकार के अशुभ वर्तमान हैं।

Scanned by TapScanner